शलोम! आइए हम मिलकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें।

हर मसीही विश्वासी को जीवन में कठिन समयों से होकर गुजरना पड़ता है—परीक्षाओं, आँसुओं और क्लेश के समयों से। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने तुम्हें छोड़ दिया है। नहीं! ये बातें हमारे विश्वास के मार्ग का हिस्सा हैं। जैसा कि शास्त्र कहता है:

“कोई इन क्लेशों के कारण विचलित न हो; क्योंकि तुम आप जानते
हो कि हम इन ही के लिये ठहराए गए हैं। क्योंकि जब हम
तुम्हारे पास थे, तब से हम ने तुम से कहा था कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे; और जैसा हुआ, तुम जानते हो।”
(1 थिस्सलुनीकियों 3:3–4, HOV)

तो जब तुम्हारे जीवन में क्लेश, आँसू या परीक्षा आती है, और फिर भी तुम विश्वास में स्थिर बने रहते हो और पीछे नहीं हटते, तब तुम्हें क्या करना चाहिए?

केवल एक ही उत्तर है: दृढ़ रहो और आगे बढ़ो। हार मत मानो! आँसू बहाना स्वाभाविक है, पर केवल आँसू तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते। आवश्यकता है कि तुम प्रभु में साहस और शक्ति पाओ।

दाऊद का उदाहरण

राजा बनने से पहले दाऊद ने अपने जीवन का एक बहुत ही अंधकारमय दिन देखा। जब वह अपनी नगर सिकलग लौटा, तो उसने पाया कि अमालेकियों ने नगर को लूटा, आग लगा दी, उसकी पत्नियाँ और उसके साथियों के परिवार बंधुआ बनाकर ले जाए गए और सब सम्पत्ति लूट ली गई।

“और जब दाऊद और उसके लोग नगर में आए, तो देखो, वह जलाया जा
चुका था, और उनकी स्त्रियाँ, और उनके बेटे और बेटियाँ बंधुआ बनाकर ले जाए गए थे। तब दाऊद और जो लोग उसके संग थे वे ऊँचे
स्वर से रोने लगे, यहाँ तक कि उनके पास रोने की भी शक्ति न
रही।”
(1 शमूएल 30:3–4, HOV)

दाऊद की दोनों पत्नियाँ भी बंधुआ बनाकर ले जाई गई थीं (v.5)। जब सब लोग अत्यन्त रो चुके और उनके पास अब कोई बल न रहा, तब

परिस्थिति और भी बिगड़ गई—लोग दाऊद को पत्थरों से मार डालने की बात करने लगे। परन्तु शास्त्र कहता है:

“परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा करके अपने को दृढ़ किया।”
(1 शमूएल 30:6, HOV)

दाऊद ने निराशा में डूबे रहने के बजाय प्रभु से पूछा और परमेश्वर ने उसे आदेश दिया कि वह शत्रुओं का पीछा करे। दाऊद ने विश्वास से आज्ञा मानी और प्रभु की सहायता से उसने अमालेकियों को हराया और सब कुछ वापस पा लिया (vv.17–19)।

प्रभु में बल पाने की शक्ति

प्रियजनो, जीवन में ऐसे समय आएंगे जब तुम बिल्कुल निर्बल और निराश अनुभव करोगे। लेकिन ठीक उसी समय तुम्हें चाहिए कि तुम अपने प्रभु में बल पाओ। जैसा प्रेरित पौलुस ने लिखा है:

“जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ।”

(2 कुरिन्थियों 12:10, HOV)

यदि दाऊद केवल रोता ही रहता और कोई कदम न उठाता, तो वह सब कुछ खो देता। परन्तु उसने जब प्रभु में बल पाया, तब नया साहस आया, और परमेश्वर ने उसे विजय दी।

हमारे जीवन में इसका उपयोग

यदि तुम स्वास्थ्य की परीक्षा से गुजर रहे हो—प्रभु में बल पाओ। प्रार्थना करते रहो, विश्वास से जीयो जैसे तुम पहले ही चंगे हो, और तुम अद्भुत कार्य देखोगे।

यदि परिवारिक समस्याएँ हैं—प्रभु में बल पाओ। प्रार्थना करते रहो, समाधान ढूँढो, और प्रभु तुम्हारे साथ रहेगा।

यदि तुम्हारे बच्चे या विवाह संकट में हैं—निराश मत हो, परन्तु प्रभु में साहस लो।

यदि तुम्हारी सेवकाई दबाव में है—प्रभु में बल पाओ और आगे बढ़ो।

यदि तुम्हारी आर्थिक स्थिति कठिनाई में है—प्रभु में बल पाओ, प्रार्थना करते रहो, और विश्वास करो कि वह द्वार खोलेगा। चाहे समय कितना भी लगे, स्मरण रखो: क्लेश अस्थायी हैं, पर तुम्हारा साहस प्रभु में स्थिर होना चाहिए।

अंतिम प्रोत्साहन

प्रभु हमें सहायता करे कि हम सदैव याद रखें—हमारी शक्ति हमसे नहीं, वरन् उसी से आती है। जब हम प्रभु में बल पाते हैं, तो वह हमें हर कठिनाई पर विजय दिलाता है, जैसे उसने दाऊद को दी।

“हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें; क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।”
(गलातियों 6:9, HOV)

प्रियजनो, इस शुभ संदेश को दूसरों के साथ बाँटिए। और यदि आपने

अब तक अपने जीवन में यीशु मसीह को ग्रहण नहीं किया है, तो आज ही अपने हृदय के द्वार खोलिए—वह आपको नया जीवन, आशा और शक्ति देना चाहता है।

प्रभु आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp